# वाच्य (voices)

वाच्य - वच्+ण्यत् का अर्थ है "कहने योग्य"।

अर्थात अपने कहने योग्य बातो को हम संस्कृत मे तीन प्रकार से कह सकते हैं-

1 कतृॆ वाच्य (active voice)

2 कमॆ वच्य (Passive voice)

3 भाव वच्य (Impersonal construction)

1 कतृॆ वाच्य- 1 कतृॆ वाच्य मे वाक्य में कर्ता की प्रधनता रहती है और इसमे प्रथमा विभक्ति होती है, वाक्य में कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है एवं क्रिया कर्ता के वचन , लिङ्ग तथा पुरुष के अनुसार होती है।

कतृॆ वाच्य एवम कर्म वाच्य के क्रिया में सकर्मक धातु के रुप चलते हैं।

2. कमॆ वाच्य- कर्म कि प्रधान्ता वाले वाच्य को कमॆ वाच्य कहते हैं इसमे क्रिया का रुप कर्म के वचन लिङ्ग एवं पुरुष के अनुसर चलता है।

कर्म कि प्रधान्ता होने के कारण कर्म मे प्रथमा विभक्ति एवम् कतॊ मे तृतीया विभक्ति होति है।. कमॆ वाच्य मे क्रिया हमेशा आत्मनेपद एक वचन की होती है

3. जिस वाक्य मे क्रिया का प्रयोग कर्ता या कर्म के अनुसार न होकर स्वतन्त्र रुप से हो वह भाव वाच्य होता है ।भाव वाच्य में क्रिया हमेशा अत्मनेपद एक वचन कि

होती है।इसमे क्रिया की प्रधान्ता होती है और कताे में तृतिया विभक्ति लगती है।इस वाक्य में कर्म नहीं होता।

यथा-

| लट् लकार में- | कतृे वाच्य | कमे वच्य- | भाव वाच्य |
|---|---|---|---|
| | रामः सत्यम् वदति भाषते वा । (सकर्मक धातु ) | रामेण सत्यः वद्यते। | |
| | रामः हसति । (अकर्मक धातु ) | ---------- | रामेण हस्यते। |
| लृट लकार में- | बलिकाः पुस्तकानि पठिष्यन्ति। | बालिकाभिः पुस्तकानि पठिष्यन्ते। | |
| | अहम त्वाम् ताडिष्यामि । | मया त्वम् ताडिष्यसे। | |
| लङ्ग लकार | अहं फ़लम् अखादम्। | मया फ़लम् अखाद्यत। | |
| | त्वं लेखान् अलिखः । | त्वया लेखाः अलिख्यन्त। | |
| विधिलिङ्ग | सः फ़लं खादेत्। | तेन फ़लं खाद्येत। | |
| | रामः पुस्तकानि पठेत् । | रामेण पुस्तकानि पठ्येरन्। | |

| | | | |
|---|---|---|---|
| लिट् लकर | रामः मुनिं ददर्श। | रामेण मुनिः ददृशे। | |
| | रावणः सीतां जहार। | रावनेण सीता जह्रे। | |